पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

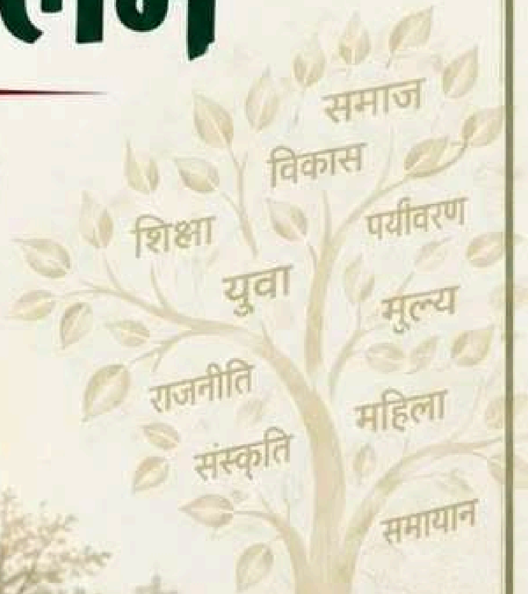

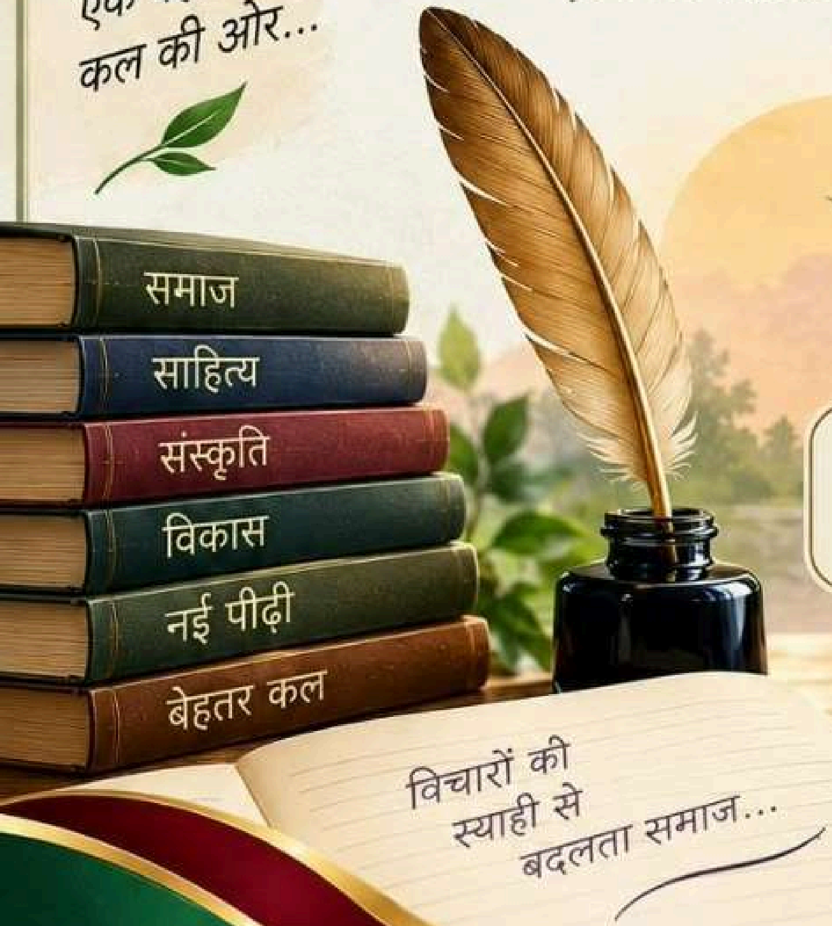

रचनाकार :-
अमिता रवि दुबे

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **अमिता रवि दुबे**

रिश्तों की प्रतिरक्षा

टूटते परिवार, अकेले बच्चे अकेले बुजुर्ग और नए परिवार की खोज

रिश्तों की प्रतिरक्षा

टूटते परिवार, अकेले बच्चे अकेले बुजुर्ग और नए परिवार की खोज

विगत चार दशक में घर परिवारों और रिश्तों के बीच जो दूरियाँ बढ़ीं हैं उसने हमारी सांस्कृतिक ,सामाजिक पारिवारिक मूल्यों को कमजोर किया है ।

अस्सी - नब्बे कें दशक में शहरीकरण के साथ रोजगार के अवसर मिले तो पलायन शुरू हो गया। तब लगा था साथ छूटेगा तो सुख आएगा,। सुख का पता नहीं। पैसा आया तो रोग बढ़ गया,परिवार बिखरे,तो माता - पिता छूट गए। अकेलापन तनाव ,अवसाद वृद्धाश्रम से लेकर आत्महत्या का रास्ता खोल दिया।

व्यक्तिवादिता ने चौतरफा अंधकार ढकेल दिया।,अर्जित परिवार रूपी संपत्ति लगभग खत्म हो गई जो शेष है अंतिम सांसें ले रही। अतः अब नवनिर्मित परिवार, समुदाय समाज पड़ोसी नए रूप गढ़ना होगा ।

परिवार की आवश्यक भूमिका और महत्व ये बातें केवल भावना नहीं यह वर्तमान की सच्चाई है।

आँकड़े और शोध वहाँ नहीं पहुँचते , जहाँ प्रतिदिन परिवारों में हो रहे घटते प्रेम और पलायन से दूरी और रिश्तों के मनोविज्ञान डगमगाते हैं।

वर्तमान परिवारों के, व्यवहार भाषा शब्दों के वजन बता रहे हैं रिश्ते टूट कर बिखर चुके हैं।

80 के दशक में 10 से 20 और इससे भी अधिक लोगों का परिवार एक साथ रहता था, संयुक्त परिवार की अपनी विशेषताएँ थी। सब लोग एक साथ मिलकर सुख दुख साँझा करते थे।

परिवार ही व्यक्ति के जीवन की मजबूत कड़ी थी।

एक परिवार की छाया में अनेक लोग रहा करते थे।

परिवार रूपी प्रेम की छाया में साँझे चूल्हे की मिट्टी की महक रोटी के हर टुकड़ों में प्रेम से लिपटी होती थी।

साथ ही बुजुर्गों का अनुभव दादी के किस्से और दादा का प्यार, ताऊ का दुलार और ताई का आँचल ममता से बढ़कर होता था। चाचा-चाची की बाँहों का झूला , बुआ का लाड़ पड़ोसी रिश्तों की खुशबू हर बच्चे के जीवन संरक्षण का आधार थी। माता-पिता की भूमिका संयुक्त परिवार में घुल मिल जाती थी इसलिए हर बच्चे को कई आँखें टिकी होती थीं।
और यही हमारे देश की पारिवारिक संरचना की मजबूत सुरक्षा योजना थी।
दादी नानी दादा सहायक चिकित्सक संरक्षक ही नहीं प्रेम के खजाने थे।
पैसा कम था प्यार अधिक ,कपड़े और खिलौने की भीड़ नहीं थी। बच्चों के लिए जिद और बीमारी के उपाय परिवार की प्रेम रूपी जड़ी बूटियाँ थीं।
कभी बच्चे अकेलेपन का शिकार नहीं होते थे।

90 के दशक में लोगों ने शिक्षा और योग्यता को आर्थिक विकास से जोड़ लिया। शहरीकरण के प्रभाव के चलते बाहर की नौकरियां और आर्थिक उन्नति को आधार मानकर परिवार से पलायन किया। औद्योगिकरण शहरीकरण ने, लोगों को बाहर का रास्ता तो दिखाए साथ ही व्यक्तिगत जीवन की स्वतंत्रता में हम दो हमारे दो की भावना को मजबूत किया। उदारीकरण के दौरान अधिक पैसे कमाने की चाहत विकास का पर्याय केवल पैसा मान महत्वाकांक्षाओं को प्रबल किया। धीरे-धीरे लोगों ने धन कमाना शुरू किया लेकिन पैसा आया और परिवार टूटने लगा।

परिवार एक दिन में नहीं टूटे नई अर्थव्यवस्था और रोजगार का शहर में जाना। नौकरियाँ गाँव से निकल शहर में आ गईं।
शहरों में जनसंख्या का दबाव, आवास की कमी,और एक कमरे के घर और गांव का बड़ा आंगन वाला घर ,एक दूसरे से दूर होते गए। जब भाई और बेटे गाँव से बाहर निकले तो, साथ में उनके बच्चे और पत्नी भी निकल गए परिवार यहीं से विभाजित होने लगे।

दूसरी ताकत आजादी की इच्छा पूरी हुई। स्वतंत्र जीवन स्वतंत्र रसोई , स्वतंत्र फैसले , परिवार की पाबंदी से मुक्ति का का भी अवसर बन गया। कई लोगों ने आजादी मान लिया।
तीसरी शक्ति बनी दौलत
विकास को केवल धन से परिभाषित किया जाने लगा था अब लोग कितना कमाते हो किस पोस्ट पर हो फ्लैट कितना बड़ा है? इन
प्रश्नों में घिर गए लोगों ने पूछना छोड़ दिया कि आप लोग कितने लोग भोजन साथ में करते हो बच्चों को कौन सा मारता है ज्यादा पैसा मतलब ज्यादा सुख अपना सपना अपना छोटा परिवार सुखी परिवार हम ज्यादा कमायेंगे, बच्चे अच्छे स्कूल में जायेंगे,
हमारी अपनी बचत होगी अनेक प्रकार के भाव निजी स्वार्थ को जन्म देने लगे।

तीन ताकत पलायन के साथ जुड़े और सपनो ने उड़ान भरी।

बीसवीं सदी के दो हजार के आते आते बहुत बड़ा परिवर्तन समाज परिवार रिश्तों में दिखने लगा।

माता पिता नौकरी कर रहे हैं। बच्चे के लिए डे केयर है। बात - बात पर शिशु रोग विशेषज्ञ है। घर पर आया बाई है।

उसके बाद काम से आकर माँ, थकी हो या बीमार नौकरी से आकर बच्चे देखे या आराम करे। पैसा आया खर्चे उससे अधिक बढ़ गए। परिवार के सहायक बिना व्यक्तिवादी विकास की उड़ान भर रहा है।

दो हजार के आते आते लोगों का जीवन यंत्रवत हो गया।

भागम भाग प्रतियोगिता और बाजार बाद की विज्ञापन भरी जिंदगी ने हाथों में स्मार्ट फोन दे दिया।सारी दुनिया मुट्ठी में आ गई। बंद कमरों में कॉन्फ्रेंस तकनीकी चकाचौंध ने पूरी सोच बदल दी।

भावनाओं के स्थान यंत्रों ने ले लिया। रिश्तों में औपचारिकता की कालिमा घिरने लगी। अब परिवार में संवाद की दूरी मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने लगी। यह एक साथ नहीं हुआ श्लो पाइजन की तरह हमारी दिनचर्या में समाने लगा।

दो हजार ग्यारह डे केयर सेंटर ट्यूशन सेंटर, और स्क्रीन टाइम। ये तीनों मिलकर बच्चों की जिंदगी के खाली स्थान को वयस्कों के अनुपस्थिति में भर रहे है। दुगना पैसा बाहर जा रहा है।

चार कमाते चालीस थे, खाते रहते साथ।

दोनों मिलकर धन कमा,, रहे न बच्चे हाथ।।

दो हजार छब्बीस के आते - आते सब कुछ डिजिटल हो गया। परिवार फ्लैट प्रेम पेमेंट प्री वेडिंग प्रीपेड प्लान पोजीशन, पाल्यूशन पार्टिशन।

अब केवल हाथ में पैसा है ।

पैसा कमाया परिवार बिखर गया। हम दो हमारे दो भी टूटने की कगार पर हैं। आपसी मतभेद इकोनॉमिक्स   कंपीटिशन, एक दूसरे से तनाव ग्रस्त संवादहीनता दूरी

टूटन रिश्तों में रिसाव।

ईमानदारी भरोसा अपनापन संरक्षण और प्रेम घटता गया और अपराध भ्रष्टाचार झूठ आडंबर बढ़ता गया।हिंसा हत्या परिवारों के बीच पैसे को लेकर खींचतान अवसाद पीड़ा क्या नहीं दिया व्यक्तिवादी सोच ने।

संयुक्त परिवार में रिश्तों में दबाव था कहीं कहीं स्वतंत्रता कम थी अत्याचार भी थे पाबंदी भी थी।

भारतीय जीवन मूल्य दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। इस तथ्य के कारण भारत में नैतिक शास्त्रों का एक विशाल भंडार है, जिसने युगों से हमारी सभ्यता का मार्गदर्शन किया। भारतीय नैतिकता की नींव समाज की पूजा, प्रार्थना, आदर्शों और सिद्धांतों के रूप में आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं में देखी जा सकती हैं। भारत में नैतिकता और धर्म के बीच गहरे संबंध हैं। नैतिक नियम लोगों के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के तरीकों का एक संकेतक है। भारत की आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति और भारतीय मूल्यों का निवास है यही भारतीयता है, इसलिए ही भारतीय संस्कृति एकमात्र आध्यात्मिक, अति मानसिक-अति बौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करता हुआ सृष्टि की रक्षा और संहार करता है उसी प्रकार भारतीय संस्कृति भी सदा सद्गुणों की सृष्टि, उनका संरक्षण एवं कल्याण विरोधी दुष्ट तत्वों के विनाश की व्यवस्था करती है। वस्तुतः यह मानवीय, विश्वव्यापी एवं सर्वलोक हितकारिणी संस्कृति है। जो इसका अपनी अज्ञानता के कारण विरोध करता है उन्हें हार्वड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर माइकेल सांडेल की बातचीत पर ध्यान देना चाहिए।

"एनलाइटनमेंट युग के कई दार्शनिक यह मानकर चलते रहे की जन समाज पर धर्म का प्रभाव क्षीण होता जाए यह अवश्यंभावी है और अंततः उसका पूरा लोप भी। मगर दिलचस्प तथ्य यह है की वैसा हुआ नहीं। काण्ट और एडम स्मिथ (जो था तो मार्केट सोसाइटी का दार्शनिक; किंतु अर्थशास्त्र को नैतिक दर्शन की शाखा मानता था) के बाद जो तीसरा तगड़ा प्रभाव था, वह उन धार्मिक परंपराओं का था जो हमारे सोच-विचार को शक्ल देते रहे और स्वयं 'एनलाइटनमेंट'के उत्तराधिकारी बौद्धिक भी उनसे भीतर ही भीतर आक्रांत रहे आए।

सांदेल इसी में आगे यह भी जोड़ते है कि ''यह बहुत बड़ी भूल थी-उन ज्ञानोदय योग के अग्रगामिओं की-यह मानकर चलना कि विज्ञान मनुष्य की आध्यात्मिक अभीप्सा को-आत्म-ज्ञान की भूख को विस्थापित कर देगा! मनुष्य सार्थक जीवन कैसे जी सकता है-यह ऐसा बुनियादी सवाल है जिसका संतोषजनक उत्तर कोई भी विज्ञान, कोई भी कैसा भी अर्थशास्त्र कभी नहीं दे सकता। आध्यात्मिक परंपराएँ इस दृष्टि से आज भी निर्धारक महत्व अक्षुण्ण रखे हुए हैं। आज के फलसफे को इसे ध्यान में रखना ही पड़ेगा। इस तथ्य का यथावत् सामना करते हुए ही वह अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकता है; अन्यथा नहीं।''[7]

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में उसका मार्गदर्शन करने के लिए कुछ नैतिक दिशा-निर्देशों की आवश्यकता होती है। यह नैतिक दिशा निर्देश विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होते हैं। भारत में नैतिकता का एक मुख्य स्रोत प्राचीन धर्म ग्रंथों में पाया जाता है, आमतौर पर वेद और स्मृतियों को नैतिकता के स्रोत के रूप में माना जाता है। भारतीय संस्कृति हमारी मानव जाति के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है। इसी की परिधि में सारे विश्व राष्ट्र के विकास के 'वसुधैव कुटुंबकम' ् के सारे सूत्र आ जाते हैं। हमारी संस्कृति में जन्म के पूर्व से मृत्यु के पश्चात् तक मानवीय चेतना को संस्कारित करने का क्रम निर्धारित है। मनुष्य में पशुता के संस्कार उभर न पाए, यह इसका एक महत्वपूर्ण दायित्व है।

*पर आज की बच्चे अकेलेपन के शिकार नहीं थे। माता पिता वृद्धाश्रम की राह नहीं जाते थे। वृद्धों के आत्महत्या और भटकते युवाओं के अवसाद की संख्या नगण्य थी।
इसी देश से गरीबी में पले लालबहादुर शास्त्री ने जन्म लिया था। तब परिजनों के बिना रिश्तेदारों के संरक्षण में वे आगे बढ़े थे।
वर्तमान दुर्दशा को देखते हुए परिवार की न्यू को मजबूत कंगूरे की जरूरत है।

पलायन के आँकड़े का सच यह है कि हमने जिस परिवार को तोड़ा उसका असर सिर्फ बच्चों पर नहीं पड़ा। सबसे घातक उन पीढ़ियों के लिए हुआ जिन्होंने परिवार बनाया था।
आज हम में से जो भी साठ साल पार कर रहे हैं। उनकी पीड़ा दस की जगह दो थाली परोसकर अनमने खाना है। सन्नाटे में दिन और उदासी में रातें है।
बेटे बेटी दूर से वीडियो कॉल में बस दिखाई देते हैं। स्पर्श नहीं है एक ग्लास पानी या दवा का सहारा न रहा।
पैसे से रोबोट आ सकता है आर्टिफिशियल यंत्र आपकी भावनाओं को नहीं टटोल सकता। गालों पर ढुलके आँसू नहीं पोंछ सकता।
आज पैसे से अधिक भावनाओं को आत्मसंबल की आवश्यकता है।
बूढों को अलग कमरे में रख दिया गया। उनकी शक्ति चलते उनके मन का करने पर रोक लगा दी गई।
उनकी भूमिका और प्रयोजन समाप्त प्राय हो गए।
अकेलापन , उदासी घुटन तनाव अवसाद में बदल गए। मौन वेदना अंदर ही अंदर तोड़ गई।
अकेलापन आज भारत में दस करोड़ से अधिक बुजुर्ग हैं । स्वास्थ सुरक्षा की दृष्टि से बुजुर्गों की संख्या बढ़ी है। लेकिन दस प्रतिशत ही अपनी सामाजिक जिंदगी में संतुष्ट हैं।
सामाजिक सर्वेक्षण अखबारों समाचारों और शोध के आधार कहते हैं। अधिक बुजुर्ग अकेले लाखों बुजुर्ग केवल टीवी में समय व्यतीत करते हैं। परिवार समाज में स्थान खाली है।
अकेलापन अचानक नहीं आया यह दुष्परिणाम पलायन से शुरू हुआ।

अकेलापन और आत्महत्या

कोलकाता के तलाकशुदा पैंसठ वर्षीय बुजुर्ग का शव फ्लैट में मिलना
विगत दिनों सितम्बर माह में दिल्ली में रिटायर्ड आईएएस अधिकारी की आत्महत्या या चाहे सैनिक द्वारा आत्महत्या अवसाद की वजह है। पढ़े लिखे संपन्न लोगों के इस तरह की मौतें अकेलेपन का कारण हैं।
*वर्तमान की त्रासदी ने पलायन और धन के साथ सारी मर्यादा तोड़ दी। बहुतेरे
शिक्षित लोगों ने पलायन कर धन तो कमाया हम दो हमारे दो साथ हो लिए। अब पति पत्नी के मध्य रिश्तों में पैसे की दीवार है।

आडंबर बढ़ता जा रहा है। तेरा मेरा के बीच प्रेम लुप्त हो गया।
युवा पीढ़ी भी यंत्रवत जीवन ढोते गुमसुम गुमराह हो रही है। घरौंदे टूट नेट चैट फेश बुक यूट्यूब गेम और ए आई की चकाचौंध दुनिया में खो रही है। टेलेंट टेंशन टेक्नीक के बीच यथार्थ बोध का मार्गदर्शक कौन। जब परिवार ही नहीं बच रहा है।
सच्चाई यह है कि सच है पर झूठ के शोर में सच खोने लगा है।
हमें एक बार परिवार प्रतिरक्षा के लिए पुनः पारिवारिक संरचना को मजबूत करने के लिए जीवन संग्राम को जीतने के लिए गहरा चिंतन मंथन की आवश्यकता है।

व्यक्तिवादिता ने हमें चौतरफा अंधकार में धकेल दिया है।

चालीस सालों में मैं,मेरा मेरे लिए मेरा कैरियर फ्लैट मेरे बच्चे सोचते सोचते समाज को ही विकृत कर दिया हमने।
अपने लिए सोचते भरोसा ही खत्म हो गया। पड़ोसी को पड़ोस की खबर न रही। भरोसे की कुंजी दौलत के नीचे ढ़ेर हो गई।
पहले पड़ोसी सहारा थे ,दादी बच्चे देख लेती थी। रिश्तों में सेवा और प्रेम की भावना आदर्श स्थापित करते थे।
अधिक कमाने और अकेले रहने के चक्रव्यूह को तोड़ पाना असंभव नहीं तो कठिन भी नहीं है।
हम *अर्जित परिवारिक मूल्यों ,आदर्शो को खोकर भारत का भविष्य नहीं देख सकते।
पुनर्स्थापन "नवनिर्मित" परिवार का स्वरूप गढ़ सकते हैं।
संयुक्त परिवार में लौट नहीं सकते। बीत गई सो बात गई आगे की सुध लें।

जरूरी नहीं कि एक छत के नीचे ही रहें।पर एक ही गाँव में एक ही शहर में एक ही मोहल्ले में एक ही सोसायटी में कुछ परिवारों को जोड़कर आत्मीय रिश्ते, भावानात्मक प्रेम का आदान -प्रदान व्यवहारिक संबोधन के साथ नूतन रिश्तों का परिवार निर्मित कर सकते हैं।
जैसा तारक मेहता का उल्टा चश्मा में गोकुल धाम सोसायटी भरोसे का परिवार और रिश्तों का सुंदर गहना है।
हम सब भी भारतीय समाज के पलायन की पीड़ा को नई दिशा देकर वर्तमान दशा सुधार सकते हैं।
आचार्य श्रीराम शर्मा जी कहते हैं हम बदलेंगे युग बदलेगा।
नूतन निर्मित परिवार में उम्मीद विश्वास प्रेम अपनत्व ओ मानवता के पंच दीप हम मिलकर आलोकित करें।

तभी आत्मोत्थान के साथ उन्नति की बगिया महकेगी।
अंतर इतना होगा विरासत तो चली गई। अब हम मूल्य आधारित भरोसे का परिवार स्वयं गढ़ेंगे। रिश्तों को बचाने के लिए परिवारों का होना जरूरी है। तभी भविष्य मुस्कुराएगा बदलते भारत की वैश्विक पहचान बनाने की दिशा में हमारा यह कदम
रिश्तों की प्रतिरक्षा कर समस्याओं का अचूक समाधान होगा।

----- अमिता रवि दुबे

लेखक परिचय

नाम – अमिता रवि दुबे
छत्तीसगढ़

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........**अमिता रवि दुबे**........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...